# वेद-वार्ता
# Veda-Vārtā

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन का त्रैमासिक वार्तापत्र

Quarterly News Letter of Maharshi Sandipani Rashtriya Vedavidya Pratishthan, Ujjain

स्थापना वर्ष - १९८७ | विक्रम संवत् २०८३ | अप्रैल २०२६ से जून २०२६ तक | कुल पृष्ठ संख्या - २० | अङ्क : ५४


## समाचार संकेतिका


* साचिव्यम् 01-02
* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना, उद्देश्य एवं प्राधिकरण 03-04
* प्रतिष्ठान के विभिन्न कार्यकलाप 04
* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड को मान्यता 04-05
* वेदभूषण एवं वेदविभूषण की परीक्षा रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम संरचना 05-06
* माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री तथा प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी 'महाकालः द मास्टर ऑफ टाइम' अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में शुभागमन 06-07
* द्वादश ज्योतिर्लिंगों में द्वादश सौमिक सुवृष्टि सोमयाग का आयोजन (सत्र 2026 - 2027) 07-08
* राजभाषा हिन्दी के प्रभावी क्रियान्वयन एवं उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए प्रतिष्ठान को प्रथम पुरस्कार 08-09
* 67वीं परियोजना समिति से स्वीकृत प्रतिष्ठान के विविध कार्यक्रम (2026-2027) 09-10
* संस्कृतभारती के नवनिर्मित केन्द्रीय कार्यालय 'प्रणव' के उद्घाटन के अवसर पर त्रिदिवसीय सम्पूर्ण वेदशाखा पारायण 10-11
* जगद्गुरु आदि शङ्कराचार्य जन्मजयन्ती महोत्सव 11
* प्रतिष्ठान एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'यज्ञ की वैज्ञानिकता एवं समकालीक उपयोगिता' विषयक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन 12
* निरन्तर व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम/पुनश्चर्या पाठ्यक्रम प्रशिक्षण 2026-27 12-14
* प्रतिष्ठान में संस्कृत भारती, मालवा प्रान्त द्वारा प्रबोधन वर्ग का आयोजन 14-15
* अतिताप प्रशमन /निवारण हेतु वेद पारायण एवं रुद्राभिषेक का आयोजन 15
* योग साधना से योग उत्सव तक : 14 दिवसीय योगाभ्यास सत्र के उपरान्त प्रतिष्ठान में 12वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 का आयोजन 16-17
* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड , उज्जैन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 हेतु आयोजित वार्षिक परीक्षा के परिणामों का प्रकाशन 18
* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 की पूरक परीक्षाओं का आयोजन 18
* अनुलग्नक - 1 19-20


## साचिव्यम्

प्रिय पाठको ! यह सर्वविदित है कि भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय द्वारा दिनाङ्क 08 अगस्त, 2022 को महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन की स्थापना का उद्देश्य वेदाध्ययन को राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली से जोड़ते हुए सस्वर वेद एवं सहगामी आधुनिक विषयों की मानकीकृत एवं गुणवत्तापूर्ण परीक्षा प्रणाली विकसित करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उक्त बोर्ड द्वारा प्रतिवर्ष वेदभूषण पञ्चम वर्ष (कक्षा-10वीं) एवं वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा-12वीं ) स्तर की परीक्षाओं का नियमित आयोजन किया जाता है। इन परीक्षाओं का एक विशिष्ट पक्ष स्वरूप सस्वर वेद की मौखिक परीक्षा है, जिसके अन्तर्गत कण्ठस्थीकरण, सस्वर पाठ एवं परिशुद्ध उच्चारण का मूल्याङ्कन किया जाता है। साथ ही, संस्कृत, अंग्रेज़ी, सामाजिक विज्ञान, गणित, विज्ञान, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा वैदिक साहित्य का इतिहास जैसे सहगामी विषयों की लिखित परीक्षाएँ भी आयोजित की जाती हैं।

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि प्रतिष्ठान प्रणाली में वेदभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा-6ठी) से लेकर वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा-12वीं) तक 11,000 से अधिक विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं। इसी क्रम में यह उल्लेखनीय है कि शैक्षणिक सत्र 2025–26 में बोर्ड द्वारा आयोजित परीक्षाओं के परिणाम अत्यंत उत्साहवर्धक रहे। वेदभूषण पञ्चम वर्ष (कक्षा-10वीं) में 719 तथा वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा-12वीं) में 535 विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त कर अपनी प्रतिभा एवं परिश्रम का उत्कृष्ट परिचय दिया। इसी प्रकार महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा आयोजित वेदभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा-6ठी) से वेदभूषण चतुर्थ वर्ष ( कक्षा-9वीं) तथा वेदविभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा-11वीं) की वेद एवं सहगामी आधुनिक विषयों की परीक्षाओं के परिणाम भी सफलतापूर्वक घोषित किए गए।

अपने अभीष्ट को प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को हार्दिक शुभाशंसाएँ। उनका यह उत्कृष्ट प्रदर्शन उनके एवं उनके गुरुजनों के शैक्षिक श्रम, अनुशासन एवं साधना का प्रतिफल होने के साथ-साथ भारतीय वैदिक ज्ञान-परम्परा की सतत जीवंतता का भी परिचायक है। हमें विश्वास है कि वे अपने ज्ञान, संस्कार, कौशल एवं चरित्रबल के माध्यम से ऋषियों की गौरवशाली परम्परा को समृद्ध करते हुए समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान देंगे। जो विद्यार्थी इस वर्ष अपने अभीष्ट को प्राप्त नहीं कर सके, वे निराश न हों। प्रत्येक प्रयास अनुभव का नवीन आयाम उद्घाटित करता है तथा प्रत्येक चुनौती आत्मविकास का सोपान होती है। सतत अध्ययन, अनुशासित परिश्रम, अटूट आत्मविश्वास एवं दृढ़ संकल्प ही सफलता तथा विकसित भारत 2047 के आधार हैं। तैत्तिरीयोपनिषद् में निर्देशित है, "स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्" अर्थात् अध्ययन और अध्यापन में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। यही उपदेश भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल आधार है तथा सतत अध्ययन, अध्यापन एवं ज्ञान-संवर्धन के प्रति हमारी निष्ठा का प्रेरणास्रोत है।

काल का स्वभाव परिवर्तन है, परन्तु संस्कृति का स्वभाव सतत प्रवाहमान रहना है। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान परम्परा ने युग-युग में स्वयं को समयानुकूल अभिव्यक्त करते हुए अपने मूल स्वरूप को अक्षुण्ण रखा है। प्रस्तुत अंक उसी अविच्छिन्न यात्रा का साक्षी है, जिसमें परम्परा केवल स्मृति नहीं, अपितु समकालीन जीवन की प्रेरक शक्ति बनकर उपस्थित होती है।

'महाकाल : द मास्टर ऑफ टाइम' अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी की प्रेरक उपस्थिति ने यह संदेश पुनः प्रतिध्वनित किया कि भारत की कालगणना, खगोलीय परम्परा एवं वैज्ञानिक दृष्टि आज भी वैश्विक विमर्श को नई दिशा देने की सामर्थ्य रखती है। इसी भावभूमि पर द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में सम्पन्न द्वादश सौमिक सुवृष्टि सोमयाग श्रौत यज्ञीय परम्परा को लोकमङ्गल एवं पर्यावरणीय संतुलन से जोड़ता है। भाषा किसी भी संस्कृति की वाहिका होती है और राजभाषा उस संस्कृति को राष्ट्रजीवन से जोड़ने का माध्यम है। जब परम्परा के साथ भाषा का संवर्धन जुड़ता है, तभी संस्कृति की अभिव्यक्ति पूर्ण होती है। राजभाषा हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट क्रियान्वयन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन द्वारा प्रतिष्ठान को प्रदत्त प्रथम पुरस्कार इसी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। वहीं इस अङ्क में उल्लिखित प्रतिष्ठान की परियोजना समिति की 67वीं बैठक में स्वीकृत विविध कार्यक्रम भविष्य की योजनाओं को सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं। जगद्गुरु आदि शङ्कराचार्य जन्मजयन्ती महोत्सव भारतीय दार्शनिक चेतना का स्मरण कराता है, तो 'यज्ञ की वैज्ञानिकता एवं समकालीन उपयोगिता' विषयक विशिष्ट व्याख्यान भारतीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के मध्य सार्थक संवाद को पुष्ट करता है।

ज्ञान तभी जीवंत रहता है, जब वह अध्यापन और प्रयोग अभ्यास दोनों में प्रवाहित हो। इसी अनुक्रम में प्रतिष्ठान से अनुदानित वेद पाठशालाओं एवं गुरु शिष्य परम्परा इकाइयों के वेद अध्यापकों एवं संस्कृत अध्यापकों हेतु आयोजित निरन्तर व्यावसायिक विकास एवं पुनश्चर्या प्रशिक्षण का विवरण भी इस अङ्क में समाविष्ट है। प्रतिष्ठान की गतिविधियाँ केवल अध्यापक प्रशिक्षण तक सीमित नहीं हैं; वे भारतीय ज्ञानपरम्परा के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक आयामों को भी समान रूप से स्पर्श करती हैं तथा समग्र कौशल विकास से भी संयोजित हैं। इसी भावना के अनुरूप संस्कृत भारती, मालवा प्रान्त द्वारा आयोजित प्रबोधन वर्ग, अतिताप प्रशमनार्थ वेदपारायण एवं रुद्राभिषेक तथा 12वें अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 के आयोजन इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि प्रतिष्ठान शिक्षा, साधना, संस्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व को एक समन्वित दृष्टि से देखता है।

अभिहित गतिविधियों की श्रृंखला में शैक्षणिक सत्र 2025-26 की पूरक परीक्षाओं का सफल आयोजन भी उल्लेखनीय है। यह इस विश्वास को दृढ़ करता है कि गुणवत्तापूर्ण सस्वर वेद शिक्षा का आधार केवल परम्परा ही नहीं, अपितु सुव्यवस्थित शैक्षिक व्यवस्था, उत्तरदायित्व एवं सतत नवाचार भी है। पाठकवृन्द अभिमुख यह अंक प्रतिष्ठान की गतिविधियों का संकलन मात्र नहीं, अपितु उस अनवरत वैदिक ज्ञान-ज्योति का साक्ष्य है, जो युगों से भारतीय मनीषा के आलोक में अविच्छिन्न रूप से प्रज्वलित रही है। आशा है कि इसके पृष्ठों में निहित विचार, ज्ञान-साधना और सांस्कृतिक प्रयत्न पाठकों के अन्तःकरण में वेदों के प्रति श्रद्धा, जिज्ञासा एवं उत्तरदायित्व की भावना को और अधिक पुष्ट करेंगी।

प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्,
सचिव, म.सा.रा.वे.वि.प्र., उज्जैन


• अध्यक्ष : श्री धर्मेन्द्र प्रधान
माननीय शिक्षा मन्त्री, भारत सरकार एवं
माननीय अध्यक्ष
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

• उपाध्यक्ष : प्रो. हृदयरञ्जन शर्मा
माननीय उपाध्यक्ष
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

• प्रधान सम्पादक : प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्
सचिव, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• सम्पादक : डॉ. अनूप कुमार मिश्र
सहायक निदेशक, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• सह-सम्पादक : श्री देवाशीष तिवारी
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान
डॉ. शम्भुनाथ मण्डल
कनिष्ठ शोध अध्येता, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• तकनीकी सहयोग : श्री शैलेन्द्र डोडिया
डी.ई.ओ., महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

प्रकाशक :
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, पो.ऑ. जवासिया, उज्जैन (म.प्र.) 456006 दूरभाष : (0734) 2502254, 2502255
ई-मेल : msrvvpujn.edu@gov.in; msrvvpujn@gmail.com वेबसाइट : www.msrvvp.ac.in

# महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना, उद्देश्य एवं प्राधिकरण

वेद अध्ययन की श्रुति / मौखिक परम्परा को संरक्षित, संवर्धित एवं विकसित करने के उद्देश्य से सोसाइटी पञ्जीकरण अधिनियम, 1860 (1860 की XXI) के अनुसार दिल्ली सें 20 जनवरी 1987 को संस्थापना स्मरणपत्र और नियमों के पंजीयन सं S-17451/1987 के अन्तर्गत "राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान" नामक स्वायत्त संस्थान का अखिल भारतीय सोसाइटी के रूप में गठन किया गया। प्रतिष्ठान की स्थापना को शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार ने संकल्प (Resolution) संख्या एफ. 6-3/85- संस्कृत-IV द्वारा दिनाङ्क 30 मार्च 1987 को राजपत्र द्वारा प्रकाशित कर उद्घोषित किया। सस्वर वेदघोष के साथ श्रावण पूर्णिमा/रक्षाबन्धन/वेदारम्भ के पावन दिन में राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान का उद्घाटन 10.08.1987 को राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में हुआ।

महर्षि सान्दीपनि, जिन्होंने उज्जयिनी में अपने वेद-वेदाङ्ग-कला आदि विद्याओं का गुरुकुल की स्थापना कर भगवान् श्रीकृष्ण को समस्त वैदिक ज्ञान प्रदान किया था, उन के स्मरण में, मई 1993 में उज्जैन में स्थानान्तरित होने के उपरान्त महर्षि सान्दीपनि के स्मरण में "महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान" के नाम से भारत सरकार, शिक्षा मन्त्रालय की अधिसूचना संख्या F.6-21/92-संस्कृत-2 दिनाङ्क 24.12.1993 द्वारा राजपत्र खण्ड-1, अनुभाग-1 में राजपत्र द्वारा उज्जैन में उद्घोषित हुआ। महाकाल ज्योतिर्लिङ्ग से दक्षिण दिशा में, जवासिया गांव में मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रदत्त 23.6 एकड़ भूखण्ड में प्रतिष्ठान का हरित परिसर है एवं विविध भवन निर्मित हैं।

प्रतिष्ठान की संस्थापना स्मरणपत्र में उल्लिखित 12 उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(i) वेद अध्ययन की श्रुति-परम्परा का संरक्षण, परिरक्षण, संवर्धन एवं विकास, जिस के लिए प्रतिष्ठान विभिन्न कार्यकलाप प्रारम्भ करेगा। जैसा कि पारम्परिक वैदिक संस्थाओं और विद्वानों को सहायता, छात्रवृत्तियाँ आदि देना, दृश्य और श्रव्य टेप रिकार्डिंग आदि।

(ii) वेद विद्वानों एवं वेद पण्डितों के माध्यम से मौखिक सस्वर वेदपाठ की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखना एवं उस पर बल देना।

(iii) वेद में उच्चतर शोध हेतु समर्पित विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना।

(iv) जिन विद्यार्थियों को वेद में निष्णता प्राप्त है, उन्हें शोध की सुविधाएं देना और उनमें समुचित वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना; जिससे कि वेदों में जो आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान है, विशेष रूप से गणित, खगोलशास्त्र, ऋतुविज्ञान, रसायनशास्त्र, द्रव्यचालिकी (हाइड्रोलिक्स) आदि के बारे में, उस का समसामयिकता/तादात्म्य आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से स्थापित किया जा सके साथ ही वेद विद्यार्थियों तथा आधुनिक विद्वानों के बीच घनिष्ठ वैचारिक सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

(v) देशभर में वेद पाठशालाओं और शोध केन्द्रों की स्थापना, उनका अधिग्रहण, प्रबन्ध चलाना या उनका पर्यवेक्षण या प्रतिष्ठान के किसी भी उद्देश्य के लिए उनका संचालन करना या भरण-पोषण आदि करना।

(vi) जो भी वेद के धर्मस्व या न्यास बन्द हो चुके हैं, या ठीक ढंग से नहीं चलाए जा रहे हैं, उनको फिर से उज्जीवित करना एवं वेद प्रसार हेतु उनका प्रबन्ध पुनः चलाना।

(vii) उन शाखाओं की ओर विशेष ध्यान देना जो लुप्त हो चुकी हैं, जिन के निपुण जानकार पण्डितों को खोजकर उन पण्डितों की व्यापक सूची तैयार करना।

(viii) यह पता लगाना कि वेदों की श्रुति-परम्परा में विशेष प्रकार के सस्वर वेद पाठ कौन-कौन से हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों, संस्थाओं और मठों में प्रचलित हैं तथा उन की वर्तमान स्थिति क्या है?

(ix) वेद शाखाओं की विभिन्न उच्चारण परम्पराओं की मूल-पाठ सामग्रियों, पाण्डुलिपियों के मुद्रण, ग्रन्थ, पुस्तकें, टीकाएँ, भाष्य एवं व्याख्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

(x) देश में नाना वेद शाखाओं के दृश्य या श्रव्य रिकॉर्ड उपलब्ध हैं उन के बारे में जानकारी संग्रह करना।

(xi) अत्यन्त प्राचीन काल से अद्यतन काल तक वेद मूलपाठ एवं वैदिक साहित्य में निहित वैज्ञानिक ज्ञान, जिनमें विज्ञान, कृषि, प्रौद्योगिकी, दर्शन-शास्त्र, योग, शिक्षा, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान और वैदिक परम्परा के क्षेत्र सम्मिलित हैं, की उन्नति हेतु अनुसन्धान करना तथा ग्रन्थालय, अनुसन्धान सुविधाएँ, मानव शक्ति तकनीकी स्टाफ आदि का प्रावधान करना।

(xii) प्रतिष्ठान की संस्थापना स्मरणपत्र के अनुरूप, प्रतिष्ठान के सभी उद्देश्यों या उद्देश्य की सफल प्राप्ति हेतु आवश्यक, आनुषङ्गिक या सहायक सभी कार्यकलाप प्रारम्भ करना।

महासभा, शासी परिषद एवं वित्त समिति प्रतिष्ठान के प्राधिकरण हैं। भारत सरकार के माननीय शिक्षा मन्त्री जी प्रतिष्ठान के योजना निकाय महासभा एवं प्राशासनिक निकाय शासी परिषद के अध्यक्ष हैं। भारत सरकार के माननीय शिक्षा मन्त्री जी द्वारा माननीय उपाध्यक्ष जी नामित किए जाते हैं। माननीय उपाध्यक्ष जी वित्त समिति एवं परियोजना समिति के माननीय अध्यक्ष हैं।

## प्रतिष्ठान के विभिन्न कार्यकलाप

प्रतिष्ठान द्वारा देश भर में वेद के प्रचार-प्रसार के लिये- वेद पाठशालाओं, गुरु शिष्य परम्परा इकाइयों, राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, शोध एवं प्रकाशन, सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, वेद पारायण, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, वेद प्रशिक्षण, वेद ज्ञान सप्ताह, वैदिक कक्षाएँ, वेद टेप रिकार्डिंग, घर बैठे वेदों की शिक्षा, वयोवृद्ध एवं वेद पाठियों-नित्याग्निहोत्रियों को वित्तीय सहायता आदि योजनागत कार्य किए जाते हैं। प्रतिष्ठान द्वारा वैदिक परम्परा के संरक्षण के लिए संचालित योजनाएँ :-

1. वैदिक सस्वर उच्चारण की मौखिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने की योजना (गुरु शिष्य योजना एवं पाठशाला योजना)
2. वेद शोध केन्द्र
3. वैदिक प्रशिक्षण केन्द्र
4. राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय
5. वैदिक सामग्री संग्रहालय
6. वेद-विज्ञान प्रदर्शनी
7. शोध, प्रकाशन एवं पुस्तकालय
8. यज्ञशाला एवं ध्यान मंडप गतिविधियां
9. वेद ज्ञान सप्ताह समारोह
10. सभी के लिये वैदिक कक्षाएँ
11. वैदिक सम्मेलन एवं संगोष्ठियाँ
12. वैदिकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम
13. सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या पुरस्कार
14. वेदविद्या शोध पत्रिका एवं वेदवार्ता वार्तापत्र
15. पत्राचार पाठ्यक्रम : घर बैठे वेदों की शिक्षा
16. वयोवृद्ध वेदपाठियों, नित्याग्निहोत्रियों को वित्तीय सहायता
17. वैदिक वनौषधि परियोजना
18. वैदिक कौशल विकास परियोजना

## महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड को मान्यता

क. शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा मान्यता

शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार ने दिनाङ्क 08.09.2022 के अपने पत्र सं.3-14/2018-Skt.I के माध्यम से महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड (मसारावेसंशिबोर्ड) को एक नियमित विद्यालय बोर्ड के रूप में मान्यता प्रदान की है। तदनुसार, मसारावेसंशिबोर्ड द्वारा प्रदत्त वेद भूषण पञ्चम वर्ष (कक्षा 10वीं) और वेद विभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा 12वीं) प्रमाणपत्र हमारे देश में स्थित उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश और केन्द्र / राज्य सरकारों के संस्थानों/निकायों में रोजगार के प्रयोजन से भारत के अन्य केन्द्र/राज्य विद्यालय बोर्डों द्वारा प्रदत्त प्रमाणपत्रों के समतुल्य हैं।

(लिंक 1:https://msrvvp.ac.in/Board_letter_from_ME_MOE.pdf;

लिंक 2: https://www.education.gov.in/national-boards )

ख. भारतीय विश्वविद्यालय संगठन द्वारा मान्यता

भारतीय विश्वविद्यालय संगठन ने 03 अगस्त 2022 के अपने पत्र सं. AIU/EV/ IN(I)2022/ MSRVSSB के माध्यम से मसारावेसंशिबोर्ड की परीक्षाओं/ अर्हताओं/पाठ्यक्रमों को भारत में उच्चतर शिक्षण संस्थानों / पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए और केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के अधीन रोजगार के प्रयोजन से केन्द्र / राज्य विद्यालय बोर्डों के 10वीं और 12वीं बोर्ड/माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर की परीक्षाओं/ अर्हताओं/पाठ्यक्रमों के समतुल्यता प्रदान की है।

(लिंक 1: https://msrvvp.ac.in/AIU-Letter.pdf ;
लिंक 2: https://msrvvp.ac.in/Equivalence_Letter_from_AIU_250124_214435.pdf)

ग. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद ने दिनाङ्क 13-09-2022 के अपने परिपत्र सं. AICTE/P&AP/Misc/2022 के माध्यम से मसारावेसंशिबोर्ड की स्थापना को मान्यता प्रदान की है और मसारावेसंशिबोर्ड, उज्जैन द्वारा सञ्चालित 10वीं ओर 12वीं ग्रेड की बोर्ड परीक्षा / अर्हता/ पाठ्यक्रमों को भारत में उच्चतर शिक्षण संस्थानों / पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए और केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के अधीन रोजगार के प्रयोजन से भारत के अन्य केन्द्र/राज्य विद्यालय बोर्डों द्वारा सञ्चालित परीक्षा/ अर्हता के समतुल्यता प्रदान की है।

वेद भूषण अर्थात् पञ्चम वर्ष (10 वीं कक्षा) और वेद विभूषण अर्थात् सप्तम वर्ष (12वीं कक्षा) हेतु बोर्ड की अंक तालिका विद्यार्थियों को 2022-23 से जारी की जा रही है।

(लिंक: https://msrvvp.ac.in/Circular_paP_220924_115837.pdf)

घ. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने 03 सितम्बर 2024 के अपने पत्र अ.शा. सं. 14-2/2023(CPP-II) (C-133004) के माध्यम से सभी विश्वविद्यालयों और उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों से अनुरोध किया था कि उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश और केन्द्र/राज्य सरकारों के संस्थानों में रोजगार के प्रयोजन से अन्य केन्द्र/राज्य विद्यालय बोर्डों द्वारा सञ्चालित परीक्षा/ अर्हता/पाठ्यक्रमों के साथ महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान (मसारावेविप्र) के अधीन महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड (मसारावेसंशिबोर्ड), उज्जैन द्वारा संचालित 10वीं और 12वीं ग्रेड की बोर्ड परीक्षा/ अर्हता/पाठ्क्रमों की समतुल्यता के संदर्भ में शिक्षा मन्त्रालय द्वारा 08 अगस्त 2022 के कार्यालय ज्ञापन का ध्यान रखने और इसके अनुसरण में आवश्यक कार्रवाई करने का अनुरोध किया। (लिंक : https://msrvvp.ac.in/ugc_recognition.pdf)

## वेदभूषण एवं वेदविभूषण की परीक्षा रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम संरचना

वेदभूषण (कक्षा-6ठी से कक्षा-10वीं) तथा वेदविभूषण (कक्षा-11वीं एवं कक्षा -12वीं) की परीक्षा रूपरेखा और पाठ्यक्रम संरचना को अत्यंत ध्यानपूर्वक इस प्रकार तैयार किया गया है कि वेद छात्रों की वैदिक एवं आधुनिक विषयों की अधिगम प्रगति, पारम्परिक दक्षता तथा सर्वांगीण विकास का समुचित मूल्यांकन किया जा सके।

पाठ्यक्रम में पारम्परिक वैदिक शिक्षा एवं आधुनिक शैक्षणिक विषयों का समन्वय किया गया है, ताकि विद्यार्थियों को संतुलित एवं समग्र शैक्षिक अनुभव प्राप्त हो सके। जहाँ आधुनिक विषयों की शैक्षणिक सामग्री सीबीएसई तथा राज्य शिक्षा बोर्डों के मानकों के अनुरूप पूर्णतः सामंजस्यित है, वहीं वैदिक अध्ययन (वेद अध्यायन) अब भी प्राचीन एवं प्रतिष्ठित परम्परागत गुरुकुल पद्धति के अनुरूप ही कराया जाता है जिसमें चयन की गई वेद शाखा का सस्वर वेद अध्ययन, संध्या, अग्निकार्य, वेद पारायण, श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ तथा यज्ञ में सहभागिता सम्मिलित हैं, जिससे वैदिक परम्परा की प्रामाणिकता, अनुशासन तथा मौखिक सम्प्रेषण की पारम्परिक पद्धति अक्षुण्ण बनी रहती है। यह समन्वित दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के अनुरूप है, जो भारत की समृद्ध पारम्परिक ज्ञान-परम्पराओं को आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने पर बल देती है।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड (मसारावेसंशिबोर्ड) के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यविवरण को NCERT द्वारा परीक्षित एवं पुनरीक्षित तथा संबद्धता उपविधि तथा परीक्षा उपविधि को CBSE द्वारा पुनरीक्षित किया गया है, जिससे राष्ट्रीय शैक्षणिक विश्वसनीयता तथा स्थापित शैक्षिक मानकों के अनुपालन की सुनिश्चित होती है। उपविधियों/पाठ्यक्रम को आवश्यकतानुसार राष्ट्रीय मानकों के अनुसार समय-समय पर अद्यतन किया जाएगा।

वेदभूषण एवं वेदविभूषण की परीक्षा प्रणाली के निम्नलिखित घटक हैं :

1. सस्वर वेद मौखिक परीक्षा, जिसका उद्देश्य पारम्परिक वैदिक अध्ययन की मूल दक्षताओं का मूल्यांकन करना है, जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

(I) कण्ठस्थीकरण – वेद मन्त्रों के परिशुद्ध स्मरण क्षमता का परीक्षण;

(ii) सस्वर पाठ – सही अनुतान, उच्चारण एवं वैदिक मन्त्रोच्चार के निर्धारित पाठ-पद्धति के पालन का आकलन;

(iii) उच्चारण – वैदिक मानकों के अनुसार ध्वन्यात्मक शुद्धता सुनिश्चित करना।

2. सहगामी आधुनिक विषयों की लिखित परीक्षा, जिसमें संस्कृत, अंग्रेज़ी, सामाजिक विज्ञान, गणित, विज्ञान, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा वैदिक साहित्य का इतिहास जैसे विषय सम्मिलित हैं। ये परीक्षाएँ छात्रों की मुख्यधारा के शैक्षणिक विषयों में प्रवीणता का मूल्याङ्कन करती हैं, जिससे वे वैदिक अध्ययन के साथ-साथ समकालीन शैक्षिक मानकों को भी प्राप्त कर सकें।

3. अतिरिक्त विषयों की परीक्षा, जिसमें मातृभाषा, योग एवं ध्यान, कम्प्यूटर शिक्षा, सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य (SUPW), व्यक्तित्व विकास तथा नैतिक शिक्षा सम्मिलित हैं। ये विषय वैदिक छात्रों के समग्र विकास में योगदान करते हैं क्योंकि ये उनकी सांस्कृतिक आधारशिला को सुदृढ़ करते हैं, डिजिटल साक्षरता को बढ़ाते हैं, शारीरिक एवं मानसिक कल्याण को संवर्धित करते हैं, सामाजिक दायित्वबोध विकसित करते हैं तथा मूल्य-आधारित चरित्र निर्माण को सशक्त बनाते हैं।

4. वेद-सम्बन्धित कौशल विकास एवं उद्यमिता पाठ्यक्रमों की परीक्षा: इन परीक्षाओं में लिखित, प्रायोगिक, मौखिक परीक्षा (Viva-Voce) तथा परियोजना कार्य घटक के रूप में सम्मिलित हैं। ये सभी घटक वैदिक छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक जीवन-कौशल, व्यावसायिक दक्षताओं, विश्लेषणात्मक चिन्तन तथा व्यावहारिक ज्ञान को विकसित करने के उद्देश्य से अभिकल्पित हैं।

## माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री तथा प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी 'महाकाल: द मास्टर ऑफ टाइम' अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में शुभागमन

दिनाङ्क 3 से 5 अप्रैल, 2026 तक डोंगला वेधशाला, उज्जैन, मध्य प्रदेश में एक त्रिदिवसीय अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन भारतीय काल-गणना, खगोल विज्ञान, ज्योतिषीय परम्परा, अन्तरिक्ष विज्ञान तथा भारतीय ज्ञान परम्परा आदि के विविध आयामों पर केन्द्रित था। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य भारतीय काल-गणना की प्राचीन वैज्ञानिक परम्परा, उज्जैन की ऐतिहासिक एवं खगोलीय महत्ता तथा आधुनिक विज्ञान के साथ उसके समन्वय पर विमर्श करना था।

सम्मेलन का शुभारम्भ माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान, मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री डॉ. मोहन यादव, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य माननीय श्री सुरेश सोनी तथा अन्य विशिष्ट विद्वानों एवं गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर उज्जैन विज्ञान केन्द्र का लोकार्पण भी किया गया। इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा -

"उज्जैन, पुरी और काशी हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रमुख केन्द्र रहे हैं—जहाँ विज्ञान और आध्यात्म का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यह परम्परा सदैव

प्रकृति-सम्मत, संतुलित और पर्यावरण आधारित जीवन दृष्टि प्रस्तुत करती रही है। उज्जैन केवल एक स्थान नहीं, बल्कि समय-निर्धारण का मानक रहा है -कालगणना की एक महत्त्वपूर्ण बौद्धिक धुरी। इसे पुनः वैश्विक मेरिडियन (Global Meridian) के रूप में स्थापित करने की चर्चा हमारी प्राचीन वैज्ञानिक चेतना को आधुनिक युग से जोड़ने का सशक्त प्रयास है।"

उक्त सम्मेलन में पद्मश्री डॉ. चमू कृष्ण शास्त्री, प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, कुलपति, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, प्रतिष्ठान के सचिव प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल् सहित विभिन्न विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों एवं अन्य संस्थाओं से जुड़े अनेक गणमान्य व्यक्ति एवं विद्वान उपस्थित रहे। सम्मेलन के अन्तर्गत आयोजित वैज्ञानिक प्रदर्शनी तथा उज्जैन विज्ञान केन्द्र के शैक्षिक भ्रमण में राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इस सहभागिता के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय ज्ञान परम्परा, प्राचीन खगोलीय विज्ञान तथा आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों के समन्वित स्वरूप से प्रत्यक्ष परिचय प्राप्त हुआ।

## द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में द्वादश सौमिक सुवृष्टि सोमयाग का आयोजन (सत्र 2026 - 2027)

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा 2026-27 सत्र में वेदों के संरक्षण, प्रचार-प्रसार तथा वेदों में निहित ज्ञान राशि का अनुप्रयोग एवं अनुसन्धान के उद्देश्य से वेद ऋषियों द्वारा दृष्ट जलवायु परिवर्तन, वर्षा पैटर्न, वृष्टिविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, मौसम विज्ञान, कृषि विज्ञान के प्रायोगिक ज्ञान- अनुप्रयोग पक्षों के उन्नयन हेतु तथा जलाशयों में जल के स्तर को बढ़ाने एवं मानसून की अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए शासी परिषद् के निर्णयानुसार देश के द्वादश (12) ज्योतिर्लिङ्गों – रामेश्वरम्, भीमाशङ्कर, त्र्यम्बकेश्वर, घृष्णेश्वर, मल्लिकार्जुन, ओङ्कारेश्वर, सोमनाथ, महाकालेश्वर, नागेश्वर, वैद्यनाथ, विश्वनाथ तथा केदारनाथ में प्रयोग रूप में 12 सोमयाग आयोजित किए जा रहे हैं। जिसमें से 8 सोमयाग 8 ज्योतिर्लिङ्गों पर सम्पन्न किये जा चुके हैं। शेष 4 सोमयाग भी इस प्रकार मई माह तक पूर्ण किए गए।

9. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से नवम सोमयाग 01 अप्रैल से 06 अप्रैल 2026 की अवधि में गुजरात राज्य के श्री नागेश्वर धाम में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

10. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से दशम सोमयाग 13 अप्रैल से 18 अप्रैल 2026 की अवधि में झारखण्ड राज्य के श्री वैद्यनाथ में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

11. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से एकादश सोमयाग 27 अप्रैल से 02 मई 2026 की अवधि में उत्तरप्रदेश राज्य के श्री विश्वनाथ धाम में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

12. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से द्वादश सोमयाग 12 मई से 17 मई 2026 की अवधि में उत्तराखण्ड राज्य के श्री केदारनाथ धाम में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

## राजभाषा हिन्दी के प्रभावी क्रियान्वयन एवं उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए प्रतिष्ठान को प्रथम पुरस्कार

दिनाङ्क 08 अप्रैल 2026 को आयकर भवन, भरतपुरी, उज्जैन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), उज्जैन द्वारा 'अवन्तिका दर्पण' का लोकार्पण, शील्ड वितरण एवं राजभाषा प्रतियोगिता पुरस्कार समारोह का भव्य आयोजन सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजा राम साह, माननीय अध्यक्ष, नराकास, उज्जैन एवं प्रधान आयकर आयुक्त (पु.इ.)-1, उज्जैन द्वारा की

गई। इस अवसर पर नराकास, उज्जैन से सम्बद्ध सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की दिशा में किए गए उल्लेखनीय प्रयासों एवं छमाही राजभाषा प्रतिवेदनों के आधार पर विभिन्न संस्थानों को सम्मानित किया गया। नराकास, उज्जैन द्वारा निर्धारित मानदण्डों पर सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन को प्रथम पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्रतिष्ठान की ओर से सचिव महोदय प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल् ने यह सम्मान ग्रहण किया। इस अवसर पर श्री संजय श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (शैक्षणिक) एवं हिन्दी अधिकारी,मसारावेविप्र तथा श्री देवाशीष तिवारी, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक,मसारावेविप्र भी उपस्थित रहे। यह सम्मान राजभाषा हिन्दी के संवर्धन, प्रसार एवं प्रभावी क्रियान्वयन के प्रति प्रतिष्ठान की सतत प्रतिबद्धता, समर्पित कार्यसंस्कृति तथा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन का गौरवपूर्ण प्रमाण है। यह उपलब्धि प्रतिष्ठान परिवार के लिए हर्ष, गौरव एवं प्रेरणा का विषय है तथा भविष्य में राजभाषा हिन्दी के उन्नयन हेतु और अधिक निष्ठा एवं उत्साह के साथ कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करती है।

## 67वीं परियोजना समिति से स्वीकृत प्रतिष्ठान के विविध कार्यक्रम (2026-2027)

प्रतिष्ठान की परियोजना समिति की दिनाङ्क 15 अप्रैल 2026 को आयोजित बैठक में विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से विविध कार्यक्रम (अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन, क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन, अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी/कार्यशाला, वेद ज्ञान सप्ताह, सभी के लिए वैदिक कक्षाएँ आदि) आयोजित करने की स्वीकृति प्रदान की गई, जिसका विवरण निम्नानुसार है –

**अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन**

1 वैदिक अनुसंधान केंद्र, 201, गोविंद हाईट्स-2, शिव शक्ति ले आऊट-2, सोनेगाव, नागपुर (प्रथम वरीयता)

**क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन**

1 श्री त्रिवेणी संस्कृत वेद विद्यापीठ, महेशमारी, मिलनमोड, चम्पासरी सिलिगुड़ी-734003

2 श्री ललिताम्बिगई वेदशिवागम ट्रस्ट, 'परिहार क्षेत्र', मोराटंडी, वानूर तालुक, जिला विल्लुपुरम, तमिलनाडु – 605101

3 श्री माँ विन्ध्यवासिनी वेद-पाठशाला समिति, बड़ा बगीचा, विन्ध्याचल, मिर्जापुर-231307, उ.प्र.

4 गायत्री वेद फाउण्डेशन द्वारा संचालित श्री गायत्री संस्कृत वेद विद्यालय, गायत्री मंदिर, भास्कर मेडिकल कॉलेज के पास चिल्कुर, मोईनाबाद, आर.आर. जिला, तेलंगाना

5 स्वामी ब्रह्मानन्द वैदिक गुरुकुल एवं अनुसंधान संस्थान, श्री क्षेत्र तपोभूमि, कुंडई, फोंडा-403115, गोवा

6 आर्षविद्या शिक्षण प्रशिक्षण सेवा संस्थान, महर्षिनगर, छोटा बरियारपुर, मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण-845402, बिहार

**उत्तरपूर्वी राज्य में :**

1 माँ गायत्री वेद विद्यालय समिति, ग्राम-गधरिया बस्ती, पोस्ट-गामिरी, जिला-विश्वनाथ, असम-784172

**अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी/कार्यशाला**

1 खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

विषय - वैदिकी यज्ञ-परम्परा-आध्यात्मिकाः सामाजिकाः वैज्ञानिकाश्च आयामः।

2 शास्त्र (SASTRA) मानित विश्वविद्यालय, तिरुमलैसमुद्रम, तंजावुर, तमिलनाडु
विषय – अखिल भारतीय वेद विज्ञान कार्यशाला

3 महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, मून्दड़ी, कैथल- 136027 (हरियाणा)
विषय – मानवीयमूल्योन्नयने वैदिकवाङ्मयावदानम् अथवा विकसितराष्ट्रसन्दर्भे वेदोक्तनैतिकमूल्यानामवदानम्

4 संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं प्राच्य भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तरप्रदेश)
विषय –शास्त्रचिन्तनपरम्परा का मूल स्रोत- वैदिक वाङ्मय

5 श्री अरबिन्दो कपाली शास्त्री वैदिक संस्कृति संस्थान (साक्षी ट्रस्ट) 'अथर्व, 19, पहला क्रॉस, सिद्दप्पा लेआउट गुब्बालाला, सुब्रमण्यपुरा पोस्ट, बेंगलुरु-560061
(Sub- Living Veda Conference- Application of Vedas in the Modern context)

6 "वैदिक सनातन परम्परा का संरक्षण, संवर्धन, प्रचार एवं प्रसार के लिए धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री महाराज (1907-1982) जी का योगदान" दिल्ली में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वद्यालय, नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित करना है।

उपर्युक्त 06 संस्थाओं को अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी आयोजित करने की स्वीकृति प्रदान की गई।

**उत्तरपूर्वी राज्य में :**

1 अध्यक्ष संस्कृत विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, जालुकबारी, गुवाहाटी-781014, असम
विषय – भारतीय ज्ञान परम्परायाः बीजभूताः वेदाः

**वेद ज्ञान सप्ताह**

1 गुरुचरण विश्वविद्यालय, कॉलेज रोड, सिलचर, जिला-कछार-788004, असम

2 महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, देवास रोड़, उज्जैन (म.प्र.)- 456010

3 श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती शङ्कराचार्य वेद पाठशाला 5/772 एवं 5/773 (ओल्ड), 11/605 एवं 11/606 (न्यू) रामनाथपुरम, पलक्कड़-678001

4 देववाणी जनकल्याण समिति वेद मूर्ति हर्षवर्धन वैदिक वेद विद्यालय, समोधपुर, जौनपुर, उ.प्र.

5 सस्तु साहित्य मुद्रणालय ट्रस्ट, अहमदाबाद, गुजरात अथवा इनके सहयोग ट्रस्ट के माध्यम से।

6 कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बेंगलुरु

**सभी के लिए वैदिक कक्षाएँ**

1 रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द एजुकेशनल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट, पोस्ट ऑफिस बेलूर मठ, जिला हावड़ा-711202, पश्चिम बंगाल

2 संस्कृत विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

## संस्कृतभारती के नवनिर्मित केन्द्रीय कार्यालय 'प्रणव' के उद्घाटन के अवसर पर त्रिदिवसीय सम्पूर्ण वेदशाखा पारायण

भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल आधार वेद हैं। वेद मानव सभ्यता के प्राचीनतम ज्ञान-स्रोत, सांस्कृतिक चेतना के आधार तथा जीवन दर्शन के अमूल्य निधि हैं। वेदों की सस्वर मौखिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में वेदपाठ की विविध परम्पराओं एवं वेदशाखाओं का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इसी वैदिक परम्परा के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं संस्कृतभारती के संयुक्त तत्त्वावधान में संस्कृतभारती के नवनिर्मित केन्द्रीय कार्यालय 'प्रणव' के उद्घाटन अवसर पर दिनांक 18 से 20 अप्रैल, 2026 तक त्रिदिवसीय सम्पूर्ण वेदशाखा पारायण का आयोजन नई दिल्ली में सम्पन्न किया गया।

त्रिदिवसीय इस वैदिक अनुष्ठान में देश के विविध राज्यों से पधारे वेदपाठी विद्वान, वेदाचार्यों ने सहभागिता करते हुए ऋग्वेद , शुक्ल यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद तथा कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा का सम्पूर्ण वेदशाखा पारायण वैदिक परम्परा के अनुरूप सम्पन्न किया।

समवेत स्वर में उच्चरित वैदिक मन्त्रों की अनुगूँज से सम्पूर्ण परिसर दिव्य एवं आध्यात्मिक वातावरण से अनुप्राणित हो उठा। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परमपूज्य सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने संस्कृत भाषा को भारत की सांस्कृतिक चेतना और विरासत का महत्त्वपूर्ण आधार बताया तथा संस्कृत के संरक्षण और प्रसार को बढ़ावा देने पर जोर दिया। कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन नबीन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक माननीय श्री सुरेश सोनी जी, संस्कृतभारती के अखिल भारतीय अध्यक्ष प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय, संस्कृतभारती के महामंत्री श्री सत्यनारायण भट्ट, संस्कृतभारती के संगठन मंत्री श्री जयप्रकाश गौतम सहित विविध क्षेत्रों के अनेक विशिष्ट विद्वान, शिक्षाविद्, संत-महात्मा तथा अन्य गणमान्य अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

विश्व के 26 देशों में 4,500 से अधिक केन्द्रों के माध्यम से सक्रिय संस्कृतभारती संस्कृत भाषा के वैश्विक प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित संगठन है। संस्कृतभारती ने अब तक 1 करोड़ से अधिक लोगों को संस्कृत संभाषण का प्रशिक्षण प्रदान किया है तथा एक लाख से अधिक संस्कृत शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के साथ 6,000 से अधिक संस्कृत गृहों की स्थापना का अभिनव कार्य भी कर चुका है।

## जगद्गुरु आदि शङ्कराचार्य जन्मजयन्ती महोत्सव

अद्वैत वेदान्त के महान आचार्य, सनातन वैदिक परम्परा के पुनरुद्धारक एवं भारतीय सांस्कृतिक एकात्मता के प्रखर संवाहक जगद्गुरु आदि शङ्कराचार्य की जन्मजयन्ती के उपलक्ष्य में प्रतिष्ठान के अधीन समस्त राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों में 'जगद्गुरु आदि शङ्कराचार्य जन्मजयन्ती महोत्सव' का श्रद्धापूर्वक आयोजन किया गया। वैशाख शुक्ल पञ्चमी (22 अप्रैल 2026) के पावन अवसर पर आयोजित इस महोत्सव का उद्देश्य विद्यार्थियों में अद्वैत वेदान्त, गुरु-शिष्य परम्परा तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति श्रद्धा, आस्था एवं बौद्धिक जिज्ञासा का संवर्धन करना था।

इस पावन अवसर पर राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा वेदों का सामूहिक पारायण एवं आदि शङ्कराचार्य स्तोत्र पाठ का सस्वर पाठ किया गया। विद्यार्थियों को जगद्गुरु आदि शङ्कराचार्य के जीवन-दर्शन एवं अद्वैत वेदान्त के मूल सिद्धान्तों से अवगत करवाया गया। सम्पूर्ण आयोजन श्रद्धा एवं आध्यात्मिक वातावरण से ओत-प्रोत रहा तथा उपस्थित सभी अध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने जगद्गुरु आदि शङ्कराचार्य के आदर्शों का अनुसरण करते हुए वैदिक ज्ञानधारा के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

# प्रतिष्ठान एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'यज्ञ की वैज्ञानिकता एवं समकालीक उपयोगिता' विषयक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'यज्ञ की वैज्ञानिकता एवं समकालीक उपयोगिता' विषय पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन दिनाङ्क 02.05.2026 को वैदिक विज्ञान केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सभागार में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. विनय कुमार पाण्डेय, समन्वयक, वैदिक विज्ञान केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने की तथा मुख्य वक्ता प्रो. रामचन्द्र भट्टजी, निदेशक, वराहमिहिर वेद विज्ञान अनुसंधान केन्द्र एवं व्यास योग विश्वविद्यालय, बेंगलूरु रहे। विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ. सुश्रुत एस., अन्तरराष्ट्रीय आध्यात्मिक अध्ययन केन्द्र, अमृत विश्वविद्यापीठम्, कोयम्बटूर ने अपने विचार उपस्थापित किए।

मुख्य वक्ता प्रो. रामचन्द्र भट्टजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वैदिक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों के लिए केवल वेदाध्ययन पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें अंग्रेजी भाषा, आधुनिक विज्ञान तथा तकनीकी विषयों का भी समुचित ज्ञान अर्जित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित करने तथा वैदिक ज्ञान को वैज्ञानिक समुदाय के समक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए आधुनिक भाषाओं एवं वैज्ञानिक विषयों का ज्ञान अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि वेद केवल उच्चारण अथवा पारायण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे अनुसन्धान, प्रयोग एवं नवाचार के भी प्रेरणास्रोत हैं। प्राचीन काल में यज्ञशालाएँ ज्ञान-विज्ञान की प्रयोगशालाओं के रूप में कार्य करती थीं, जहाँ ऋषि-मुनियों ने प्रकृति, स्वास्थ्य एवं जीवन से जुड़े अनेक रहस्यों का अन्वेषण किया। विशिष्ट वक्ता डॉ. सुश्रुत एस. ने वैज्ञानिक उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यज्ञ से वातावरण की शुद्धि में सहायता मिलती है। उन्होंने मानव शरीर में वात, पित्त एवं कफ के संतुलन की अवधारणा का उल्लेख करते हुए इनके मापन के लिए 'नाड़ी तरङ्गिणी' यन्त्र के उपयोग की भी जानकारी दी।

इस अवसर पर वैदिक विज्ञान केन्द्र के समन्वयक प्रो. विनय कुमार पाण्डेय ने कहा कि बीएचयू विश्व का एक ऐसा विशिष्ट विश्वविद्यालय है जहाँ प्राचीन ज्ञान एवं आधुनिक विषयों का समन्वित अध्ययन-अध्यापन किया जाता है। उन्होंने वेद विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे अपने ज्ञान को केवल कर्मकाण्ड तक सीमित न रखें, बल्कि आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं भाषाई दक्षता से स्वयं को समृद्ध करें, जिससे भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रभावी वैश्विक प्रसार सुनिश्चित किया जा सके।

कार्यक्रम का सञ्चालन डॉ. धीरज मिश्र ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन नारायणगञ्ज तीर्थ वेद विद्यालय के जयवर्धन त्रिपाठी द्वारा प्रस्तुत किया गया। व्याख्यान में विद्वानों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता कर वैदिक ज्ञान एवं आधुनिक विज्ञान के समन्वय पर सार्थक विमर्श किया तथा कार्यक्रम ज्ञानवर्धक एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

# निरन्तर व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम/पुनश्चर्या पाठ्यक्रम प्रशिक्षण 2026-2027

भारत सरकार द्वारा दिनाङ्क 29 जुलाई, 2020 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 (NEP 2020) लागू की गई। प्रतिष्ठान के अधीन कक्षा 6ठी से लेकर 12वीं तक के छात्र वेद एवं आधुनिक विषयों का अध्ययन करते हैं, बोर्ड के समकक्ष प्रमाण पत्र प्राप्त करते हैं। इस प्रकार प्रतिष्ठान केवल अनुदान वितरण करने वाली संस्था न होकर एक वेद सम्बद्ध शैक्षिक संस्थान भी है।

इसी क्रम में प्रतिष्ठान से सम्बद्ध समस्त वेदपाठशालाओं, गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों तथा राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों के वेद एवं आधुनिक विषयों के अध्यापकों के लिए प्रतिवर्ष 50 घण्टे के निरन्तर व्यावसायिक विकास (CPD) कार्यक्रमों में सहभागिता अनिवार्य की गई है। यह व्यवस्था अध्यापकों के सतत व्यावसायिक विकास, नवीन शैक्षिक दृष्टिकोणों के समावेश तथा भारतीय ज्ञान परम्परा और

आधुनिक शिक्षा के समन्वित विकास की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल है। भारत सरकार द्वारा जारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति होने के कारण यह नीति सभी अध्यापकों (वेद एवं आधुनिक विषयों के पुराने तथा नए) पर लागू होती है।

## (क) प्रतिष्ठान से अनुदानित वेद पाठशालाओं/गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों में सेवारत वेदाध्यापकों हेतु निरन्तर व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम/पुनश्चर्या पाठ्यक्रम प्रशिक्षण 2026-2027 का आयोजन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के आलोक में वेद अध्यापकों के ज्ञान, अध्यापन कौशल एवं व्यावसायिक दक्षता के सतत उन्नयन के उद्देश्य से महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन में 01 मई, 2026 से 15 मई, 2026 तक 15 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम एवं सतत व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रतिदिन वेद की समस्त शाखाओं का वेद पारायण, संस्कृत व्याकरण, संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन, संस्कृत सम्भाषण, शैक्षिक नवाचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के विविध आयामों पर परिचर्चा, योगाभ्यास, स्तोत्रपाठ, श्रीमद्भगवद्गीता का सामूहिक पाठ तथा वेद विद्यालय प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों पर प्रशिक्षण एवं विचार-विमर्श के सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों का उद्देश्य अध्यापकों के विषयज्ञान, अध्यापन कौशल तथा समकालीन शैक्षिक दृष्टिकोण का समन्वित विकास सुनिश्चित करना था।

ऋग्वेद शाकल शाखा

शुक्ल यजुर्वेद काण्व शाखा

शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा

कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय शाखा

सामवेद राणायनीय शाखा

सामवेद कौथुम शाखा

अथर्ववेद शौनक शाखा

अथर्ववेद पैप्पलाद शाखा

प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों में डॉ. भरत वैरागी, डॉ. सदानन्द त्रिपाठी तथा प्रतिष्ठान सचिव प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल् आदि ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए। उनके मार्गदर्शन से प्रतिभागियों को संस्कृत शिक्षण की नवीन पद्धतियों, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन से सम्बन्धित उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिष्ठान से अनुदानित विभिन्न वेद पाठशालाओं के वेद अध्यापकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान प्रतिष्ठान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापक भी उपस्थित रहे। यह पुनश्चर्या पाठ्यक्रम प्रशिक्षण संस्कृत अध्यापकों के व्यावसायिक विकास, शैक्षणिक गुणवत्ता तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रभावी संवर्धन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

## (ख) प्रतिष्ठान से अनुदानित वेद पाठशालाओं में सेवारत संस्कृत अध्यापकों हेतु सतत व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम/ पुनश्चर्या पाठ्यक्रम प्रशिक्षण 2026-27 का आयोजन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के आलोक में संस्कृत अध्यापकों के ज्ञान, अध्यापन कौशल एवं व्यावसायिक दक्षता के सतत उन्नयन के उद्देश्य से महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन में 15 मई, 2026 से 30 मई, 2026 तक 15 दिवसीय पुनश्चर्या पाठ्यक्रम एवं सतत व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रम प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

प्रशिक्षण के अंतर्गत प्रतिदिन संस्कृत व्याकरण, संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन, संस्कृत सम्भाषण, शैक्षिक नवाचार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के विविध आयामों पर परिचर्चा, योगाभ्यास, स्तोत्रपाठ, श्रीमद्भगवद्गीता का सामूहिक पाठ तथा वेद विद्यालय प्रबन्धन से सम्बन्धित विषयों पर प्रशिक्षण एवं विचार-विमर्श के सत्र आयोजित किए गए। इन सत्रों का उद्देश्य अध्यापकों के विषयज्ञान, अध्यापन कौशल तथा समकालीन शैक्षिक दृष्टिकोण का समन्वित विकास सुनिश्चित करना था।

प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों में डॉ. भरत वैरागी, डॉ. सदानन्द त्रिपाठी तथा प्रतिष्ठान सचिव प्रो. विरूपाक्ष वी. जड्डीपाल् आदि ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए। उनके मार्गदर्शन से प्रतिभागियों को संस्कृत शिक्षण की नवीन पद्धतियों, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन से सम्बन्धित उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिष्ठान से अनुदानित विभिन्न वेद पाठशालाओं के 81 संस्कृत अध्यापकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान प्रतिष्ठान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ-साथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापक भी उपस्थित रहे। यह पुनश्चर्या पाठ्यक्रम प्रशिक्षण संस्कृत अध्यापकों के व्यावसायिक विकास, शैक्षणिक गुणवत्ता तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रभावी संवर्धन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

## प्रतिष्ठान में संस्कृतभारती, मालवा प्रान्त द्वारा प्रबोधन वर्ग का आयोजन

संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार एवं संस्कृत सम्भाषण के व्यापक संवर्धन के उद्देश्य से महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान एवं संस्कृतभारती, मालवा प्रान्त के संयुक्त तत्त्वावधान में 15 मई से 23 मई, 2026 तक प्रतिष्ठान परिसर, उज्जैन में प्रबोधन वर्ग का सफल आयोजन किया गया। इस वर्ग में संस्कृतभारती के 92 सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। प्रबोधन वर्ग के अंतर्गत प्रतिभागियों को संस्कृत सम्भाषण, भाषा क्रीड़ा, शुद्ध वर्णोच्चारण, संस्कृत व्याकरण, श्रीमद्भगवद्गीता पाठ, सुभाषित, स्तोत्र पाठ, गीता प्रतियोगिता, हास्य कारिका, श्लोक अन्त्याक्षरी तथा लघु संस्कृत नाट्य प्रस्तुतियों आदि के माध्यम से संस्कृत भाषा के व्यावहारिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विविध गतिविधियों के माध्यम से प्रतिभागियों की संस्कृत सम्भाषण क्षमता, भाषिक दक्षता एवं सांस्कृतिक बोध को समृद्ध किया गया। समापन सत्र में प्रतिष्ठान सचिव प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल् मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। प्रो. सीमा शर्मा ने

सारस्वत अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त किए तथा डॉ. भरत बैरागी ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुरेन्द्र शर्मा ने की तथा श्री अभय महादेव ने वर्ग प्रमुख के रूप में उपस्थित रहे। इस अवसर पर राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापकगण भी उपस्थित रहे।

## अतिताप प्रशमन /निवारण हेतु वेद पारायण एवं रुद्राभिषेक का आयोजन

दिनाङ्क 24 से 28 मई, 2026 पर्यन्त प्रतिष्ठान परिसर, उज्जैन की यज्ञशाला में जनकल्याण एवं अतिताप प्रशमनार्थ वेद पारायण तथा रुद्राभिषेक सम्पन्न किया गया। इस अनुष्ठान का उद्देश्य वैदिक परम्परा के अनुरूप प्रकृति में संतुलन, पर्यावरणीय शुद्धि तथा समस्त प्राणियों के कल्याण हेतु सामूहिक प्रार्थना एवं आध्यात्मिक अनुष्ठान का सम्पादन करना था। कार्यक्रम के अंतर्गत गणपति पूजन, वरुण पूजन, शिव पञ्चायतन पूजन, रुद्राभिषेक, षडङ्ग रुद्र होम तथा वैदिक मन्त्रों के सस्वर पारायण का विधिवत आयोजन किया गया। समस्त अनुष्ठान प्रतिष्ठान के अन्तर्गत सञ्चालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापकों द्वारा वैदिक विधि-विधान के अनुसार सम्पन्न कराए गए। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्र की समृद्धि, लोकमङ्गल, पर्यावरणीय संतुलन तथा समस्त प्राणियों के सुख, शान्ति एवं आरोग्य की मङ्गलकामना की गई।

# योग साधना से योग उत्सव तक : 14 दिवसीय योगाभ्यास सत्र के उपरान्त प्रतिष्ठान में 12वें अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 का आयोजन

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 की पूर्वपीठिका के रूप में महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के परिसर में दिनाङ्क 27 मई से 09 जून 2026 तक 14 दिवसीय योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया गया था। इस सत्र में प्रतिष्ठान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं अध्यापकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए नियमित योगाभ्यास का लाभ प्राप्त किया।

इसी अनुक्रम में भारत सरकार के आयुष मन्त्रालय के दिशा-निर्देश तथा “स्वस्थ आयु के लिए योग” की भावना के अनुरूप महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन में दिनाङ्क 21 जून, 2026 को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 के अवसर पर विशेष योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रतिष्ठान परिसर, उज्जैन में आयोजित योग कार्यक्रम में प्रतिष्ठान के अधिकारियों, कर्मचारियों, राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के वेदाध्यापकों, आधुनिक विषय अध्यापकों तथा विद्यार्थियों सहित लगभग 260 प्रतिभागियों की उत्साहपूर्वक सहभागिता रही। वहीं, प्रतिष्ठान के अन्तर्गत संचालित समस्त राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय तथा प्रतिष्ठान से देशभर (ओडिशा, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र आदि) में सम्बद्ध विभिन्न वेद पाठशालाओं तथा गुरु-शिष्य परम्परा इकाइयों में आयोजित योग गतिविधियों में 11,000 से अधिक वेद छात्रों ने सहभागिता कर योग के प्रति अपनी जागरूकता एवं प्रतिबद्धता का परिचय दिया।

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 के अवसर पर माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के उद्बोधन को सामूहिक रूप से श्रवण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। अपने उद्बोधन में माननीय प्रधानमन्त्री जी ने योग को स्वस्थ, संतुलित एवं समरस जीवन का आधार बताते हुए उसे जन-जन तक पहुँचाने तथा दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाने का आह्वान किया। उद्बोधन के उपरान्त प्रतिष्ठान परिसर में योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार विभिन्न योगासनों, प्राणायाम तथा ध्यानाभ्यास का सामूहिक अभ्यास कर स्वस्थ जीवन शैली अपनाने का संकल्प लिया।

इस अवसर पर आंतरिक परिचालन के लिए तैयार की गई 'योगाभ्यास-दीपिका' का लोकार्पण प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्, सचिव, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान द्वारा किया गया। 'योगाभ्यास-दीपिका' योगाभ्यास के प्रति जागरूकता एवं नियमित अभ्यास को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से तैयार की गई है। राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के योगाचार्य श्री अभिजीत राजपूत ने 14 दिवसीय योगाभ्यास सत्र एवं अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस-2026 के अवसर पर योगाभ्यास का सञ्चालन किया तथा प्रतिभागियों को योग, प्राणायाम एवं ध्यान का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया।

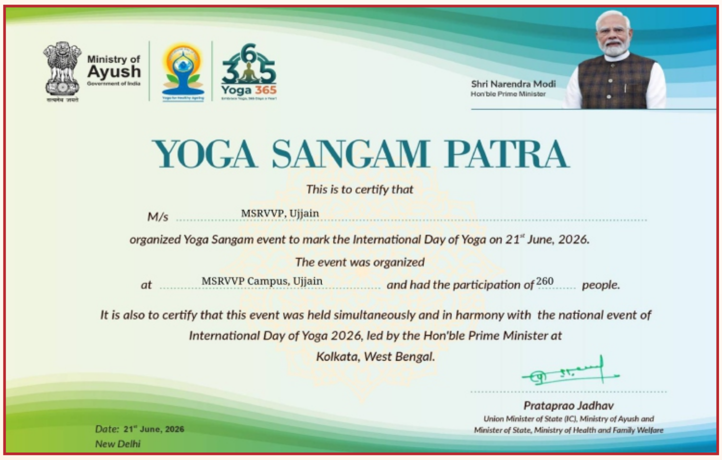
Ministry of Ayush, Government of India

Yoga 365

Shri Narendra Modi
Hon'ble Prime Minister

YOGA SANGAM PATRA

*This is to certify that*

*M/s* MSRVVP, Ujjain

*organized Yoga Sangam event to mark the International Day of Yoga on 21st June, 2026.*

*The event was organized*

*at* MSRVVP Campus, Ujjain *and had the participation of* 260 *people.*

*It is also to certify that this event was held simultaneously and in harmony with the national event of International Day of Yoga 2026, led by the Hon'ble Prime Minister at Kolkata, West Bengal.*

*Prataprao Jadhav*
*Union Minister of State (IC), Ministry of Ayush and Minister of State, Ministry of Health and Family Welfare*

*Date: 21st June, 2026*
*New Delhi*

## महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड , उज्जैन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 हेतु आयोजित वार्षिक परीक्षा के परिणामों का प्रकाशन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा अनुदानित वेद पाठशालाओं/गुरु शिष्य परम्परा इकाइयों, अनुदानरहित वेद पाठशालाओं/गुरु शिष्य परम्परा इकाइयों एवं बाह्य परीक्षा प्रणाली के वेदभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा-6ठी) से वेदभूषण चतुर्थ वर्ष (कक्षा-9वीं) एवं वेद-विभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा-11वीं) के विद्यार्थियों के शैक्षणिक सत्र 2025-26 की परीक्षाएं दिनाङ्क 23.02.2026 से 27.02.2026 तक देश भर में निर्धारित 87 परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की गईं।

इस प्रकार महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन द्वारा वेदभूषण पञ्चम वर्ष (कक्षा-10 वीं) एवं वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा-12वीं) के विद्यार्थियों की परीक्षाएं क्रमशः दिनाङ्क 23.02.2026 से 27.02.2026 पर्यन्त एवं दिनाङ्क 09.03.2026 से 13.03.2026 पर्यन्त प्रतिष्ठान परिसर, उज्जैन में आयोजित की गईं।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 हेतु आयोजित वार्षिक परीक्षा के परिणाम दिनाङ्क 21 मई, 2026 को घोषित किए गए। ये परिणाम प्रतिष्ठान एवं बोर्ड की वेबसाइट पर प्रकाशित किए गए।

## महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 की पूरक परीक्षाओं का आयोजन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 की पूरक परीक्षाओं का आयोजन दिनाङ्क 22.06.2026 से 24.06.2026 पर्यन्त किया गया।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान,उज्जैन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 की वेदभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा-6ठी) से वेदभूषण चतुर्थ वर्ष (कक्षा-9वीं) एवं वेद विभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा-11वीं) की पूरक परीक्षाएं दिनाङ्क 22.06.2026 से 24.06.2026 पर्यन्त निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित की गईं।

इस प्रकार महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड, उज्जैन द्वारा वेदभूषण पंचम वर्ष (कक्षा-10वीं) एवं वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा-12वीं) की पूरक परीक्षाएं राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन में आयोजित की गईं।

अनुलग्नक - 1

**महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के "वेद भूषण" (दसवीं /पूर्व मध्यमा समकक्ष) एवं "वेद विभूषण" (बारहवीं / उत्तर-मध्यमा समकक्ष) पाठ्यक्रमों को समकक्ष मान्यता प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों के नाम**

1. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, 56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी नई दिल्ली द्वारा
पत्र सं. 8-2/RSKS/Acd/Misc./2009-10/92 दिनांक 23जून, 2011/केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
**वेद भूषण** समकक्ष (10वीं) **वेद विभूषण** समकक्ष (10 + 2)
2. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरुपति (आ.प्र.) द्वारा
पत्र सं. RSVP/Recg/2011-12/1283 दिनांक 15 दिसम्बर, 2011/राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति
**वेद भूषण** समकक्ष एस.एस.सी. (10वीं) **वेद विभूषण** समकक्ष प्राक शास्त्री (10+2)
3. श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति, आं.प्र. द्वारा पत्र सं. SVVU/R.Peshi/Gen/103/2012 दिनांक 13 जुलाई, 2012
**वेद भूषण** समकक्ष ---- **वेद विभूषण** समकक्ष माध्यमिक एवं 10+2 परीक्षा
4. कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बेंगलुरु, कर्नाटक द्वारा पत्र सं. KSU/SSN/2012-13/185 दिनांक 19 नवम्बर, 2012
**वेद भूषण** समकक्ष वेद प्रवेश एवं वेद मूल /काव्य **वेद विभूषण** समकक्ष साहित्य
5. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान द्वारा
पत्र सं./जरारासंविवि/शैक्ष./12/5955 दिनांक 11/10/2012
**वेद भूषण** समकक्ष ------------ **वेद विभूषण** समकक्ष वरिष्ठ उच्चतर माध्यमिक
6. श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, ओडिशा द्वारा
पत्र सं. 4454/2013S.J.S.V., Puri Aca - 13/2000 दिनांक 30 अप्रैल, 2013
**वेद भूषण** समकक्ष ------------ **वेद विभूषण** समकक्ष उपशास्त्री (+2 कला)
7. श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय (मानित विश्वविद्यालय) कांचीपुरम, तमिलनाडु
द्वारा पत्र सं. F/SCSVMV/REG/2012-13/D396 दिनांक 27 जून, 2013
**वेद भूषण** समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं
8. गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय (मानित विश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड द्वारा
पत्र सं. Acad/Res/2065/2013-14 दिनांक 14 सितम्बर, 2013
**वेद भूषण** समकक्ष विद्याधिकारी **वेद विभूषण** समकक्ष विद्याविनोद
9. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा द्वारा पत्र सं. AC - 3/F - 208/2014/7221 दिनांक 27 मार्च, 2014
**वेद भूषण** समकक्ष विद्याधिकारी **वेद विभूषण** समकक्ष विद्याविनोद
10. उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, द्वारा पत्र सं. 850/प्रशासन/2016दिनांक 03 फरवरी, 2016
**वेद भूषण** समकक्ष --------- **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं
11. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा पत्र सं. CS/AC -4/2019/1246 दिनांक 15 अप्रैल, 2019
**वेद भूषण** समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं
12. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), केन्द्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा
पत्र सं. आई.जी./एस.आर.डी./आर-IV/समकक्ष/2019/590 दिनांक 4 अप्रैल, 2019
**वेद भूषण** समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं

13. पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा पत्र सं. ST -1802 दिनांक 12 फरवरी, 2019

| | | | |
|---|---|---|---|
| **वेद भूषण** | समकक्ष मध्यमा | **वेद विभूषण** | समकक्ष प्राक शास्त्री |

14. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार द्वारा पत्र सं. 741 दिनांक 13 जून, 2019

| | | | |
|---|---|---|---|
| **वेद भूषण** | समकक्ष मध्यमा | **वेद विभूषण** | समकक्ष उपशास्त्री |

15. कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत -पुरातनाध्ययन विश्वविद्यालय, नलबारी, असम द्वारा पत्र सं. KBVS & ASU/Reg-I-C/101-411 दिनांक 2 मार्च, 2020

| | | | |
|---|---|---|---|
| **वेद भूषण** | समकक्ष 10वीं | **वेद विभूषण** | समकक्ष 12वीं (शास्त्री –बी.ए. में प्रवेश हेतु) |

16. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला द्वारा पत्र सं. 1-1/हि.प्र.वि.वि./शै/2010/खंड – VI/4359 दिनांक 28 जुलाई, 2020 वेदविभूषण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण छात्र विज्ञान सम्बन्धी पाठ्यक्रम को छोड़कर अन्य स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु योग्य हैं ।

17. श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली -110016 द्वारा पत्र सं. F 3/12/LBSV/Acad./ 2020/ 2492 / 357 दिनांक 11 सितम्बर, 2020 वेदविभूषण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण छात्र (12वीं के समकक्ष) विविध स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु मापदण्ड पूर्ण करने पर प्रवेश हेतु योग्य है ।

18. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी,उ. प्र. द्वारा पत्र सं. SSVV/12/Shai.1114/2020 दिनांक 17 दिसम्बर, 2020

| | | | |
|---|---|---|---|
| **वेद भूषण** | समकक्ष पूर्व मध्यमा | **वेद विभूषण** | समकक्ष उत्तर मध्यमा |

19. महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा पत्र क्र. मपासंवि/ अका/ 21-22/1102 दिनांक 07 फरवरी, 2022

| | | | |
|---|---|---|---|
| **वेद भूषण** | 10वीं समकक्ष | **वेद विभूषण** | 12वीं समकक्ष |

टिप्पणी- इन विश्वविद्यालयों ने "वेद भूषण" और "वेद विभूषण" पाठ्यक्रमों को वेद, अंग्रेजी, संस्कृत, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि आधुनिक विषयों के साथ निर्धारित पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण होने पर स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु मान्यता दी है।


**प्रेषक / From**

**सचिव/Secretary,**
**महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान**
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)
MAHARSHI SANDIPANI RASHTRIYA VEDA VIDYA PRATISTHAN
(An Autonomous Organisation of Ministry of Education, Govt. of India)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, पो.ऑ. जवासिया, उज्जैन (म.प्र.) 456006
Vedavidya Marg, Chintaman Ganesh, P.O. Jawasiya, Ujjian (M.P.) 456006
दूरभाष /Telephone : (0734) 2502254, 2502255
ई-मेल /E-mail : msrvvpujn.edu@gov.in; msrvvpujn@gmail.com
वेबसाइट / Website : www.msrvvp.ac.in


**सेवा में / To,** **Book-Post**